eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 10, October 2024

धारणीय विकास

विद्या भूषण[1], प्रो0 राजेश चन्द्र मिश्र[2]
[1]शोधार्थी, हीरालाल रामनिवास पी0जी0 कालेज, खलीलाबाद, संत कबीर नगर, उत्तर प्रदेश
[2]वाणिज्य विभाग, हीरालाल रामनिवास पी0जी0 कालेज, खलीलाबाद, संत कबीर नगर, उत्तर प्रदेश

Received: 24 Oct 2024 Accepted & Reviewed: 25 Oct 2024, Published : 31 Oct 2024

Abstract

''धारणीय विकास ऐसा विकास है जो कि भावी पीढ़ियों की आवश्यकता के पूर्ति की क्षमता से समझौता किये बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकता की पूर्ति करे।''

एक बार महात्मा गांधी ने कहा था कि प्रकृति पर जितने भी जीव हैं, उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रकृति ने उतने ही पर्याप्त प्राकृतिक संसाधनों की व्यवस्था की है, लेकिन वह आवश्यकता हमारी वास्तविक आवश्यकता होनी चाहिए। जब आवश्यकता लालच का रूप ले लेती है तो प्रकृति द्वारा दिए गये संसाधनों का न्याय संगत उपयोग नहीं किया जाता है। उनका अपव्यय किया जाता है, जिसका परिणाम यह होता है कि हम अपने आने वाली पीढ़ियों के लिए अंधकार के सिवा कुछ नहीं छोड़ कर जाते हैं, जो कि उनके लिए अन्याय के स्वरूप हैं। सन् 1987 ई0 में ब्रैटलैंड में सर्वप्रथम धारणीय विकास की अवधारणा का प्रतिपादन किया गया था। ''विश्व संरक्षण रणनीति'' नामक रिपोर्ट, जो कि अन्तर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ द्वारा प्रतिपादित की गई थी। इसी रिपोर्ट में सर्वप्रथम धारणीय विकास शब्द का सार्वजनिक प्रयोग किया गया था। तत्पश्चात् 1987 ई0 में ही पर्यावरण एवं विकास पर संयुक्त राष्ट्र विश्व आयोग ने (World Commission on Environment and Development) ने भी एक रिपोर्ट जारी की थी। इस रिपोर्ट का शीर्षक हमारा साझा भविष्य (Our Common Future) में भी धारणीय विकास (Sustainable Development) शब्द का व्यापक अर्थ में प्रयोग किया था तथा इस शब्द को परिभाषित किया था। इस रिपोर्ट में यह स्पष्ट बताया गया कि ''धारणीय विकास (Sustainable Development) विकास का वह तरीका है या यह कहा जाए कि हम इसमें विकास तो करते हैं, लेकिन भविष्य की चिंताओं का ध्यान रखकर, अर्थात् इस विकास में हम अपने वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास तो करते हैं, लेकिन साथ ही साथ हम अपने आने वाली पीढ़ियों और भविष्य की आवश्यकताओं का भी ध्यान रखते हैं। विकास की इस दौड़ में धारणीय विकास के अन्तर्गत हम ऐसा कोई भी काम नहीं करते, जिसका उद्देश्य केवल वर्तमान की आवश्यकता को पूरा करना हो और परिणाम भविष्य की आवश्यकताओं को न पूरा कर पाना हो। धारणीय विकास की अवधारणा को तभी बनाए रखा जा सकता है, जब हमारा विकास पर्यावरण की सुरक्षा को दृष्टि में रखकर किया जाय।

अतः पर्यावरण सुरक्षा को बिना ध्यान में रखे हम अपने विकास में निरन्तरता नहीं ला सकते। इसका परिणाम यह होगा कि हम अपना जीवन तो सफल बना लेंगे, लेकिन आने वाली पीढ़ियों अर्थात् भविष्य के लिए सब कुछ नाश कर देंगे। अतः यहाँ यह हमारा नैतिक दायित्व बनता है कि हम विकास की दौड़ में ऐसा कोई भी काम न करें, जिससे हमारे भविष्य में आने वाली पीढ़ियों को अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कुछ बचे ही न।

मुख्य शब्द– धारणीय विकास, अर्थव्यवस्था, भविष्य, प्राकृतिक संसाधन, उपयोग, तकनीकी, दूरदर्शिता, न्यायसंगत उपयोग, अपव्यय।

Introduction

''जब हम अपने विकास में भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग इस प्रकार से करते हैं कि जिससे वर्तमान आर्थिक विकास और पर्यावरण संसाधनों की सुरक्षा के बीच एक सन्तुलन बना सके।'' यही धारणीय विकास (Sustainable Development) कहलाता है।

वर्तमान में पूरे विश्व का ध्यान धारणीय विकास पर निरन्तर बना हुआ है। धारणीय विकास एक वैश्विक दृष्टिकोण बन गया है। इसके महत्त्व को इससे समझा जा सकता है कि जब सन् 1992 ई0 में पृथ्वी सम्मेलन का आयोजन किया गया तथा इस सम्मेलन द्वारा घोषित एजेण्डा–21 (रियो घोषणा पत्र) में धारणीय विकास पर विशेष जोर दिया गया। तत्पश्चात् सन् 2002 ई0 में जब जोहांसवर्ग सम्मेलन का आयोजन किया गया, उसमें भी धारणीय विकास को ही मुख्य विषय के रूप में रखा गया।

आवश्यकता– आज हमें धारणीय विकास पर इतना विचार करने की आवश्यकता क्यों पड़ी। आज विश्व में कोई भी अन्तर्राष्ट्रीय संस्था, अन्तर्राष्ट्रीय मंच, राष्ट्रीय मंच या देश के अन्दर कोई भी छोटी बड़ी जो भी संस्था हो, सबका ध्यान और उनके प्राथमिक कार्य में धारणीय विकास को सम्मिलित किया जा रहा है। यह बताता है कि धारणीय विकास हमारे लिए इस समय कितना आवश्यक है। धारणीय विकास की आवश्यकता को जानने से पहले हम यह जानने का प्रयास करते हैं कि अगर धारणीय विकास पर विचार नहीं किया गया तो परिणाम कितने भयावह होंगे। आज पूरा विश्व तमाम समस्याओं से जूझ रहा है, जिसमें मुख्यतया ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन अपक्षय, पर्यावरण प्रदूषण, वायु प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, तमाम नई–नई बीमारियाँ, संसाधनों का अपव्यय, समाप्त होते प्राकृतिक संसाधन और इस प्रकार की अनगिनत समस्याएँ हैं जो आज हमें धारणीय विकास पर सोचने के लिए मजबूर कर रही है। इन समस्याओं के साथ–साथ एक सबसे बड़ी समस्या यह है कि आज का मानव प्रकृतिवादी होने की जगह पर भौतिकवादी होता जा रहा है, परिणामस्वरूप प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग तो वैसे कर रहा है, जैसे कि यह सारे के सारे प्राकृतिक संसाधन केवल उसी के लिए बने हों। इस सोच को बदलने और समस्याओं को समाप्त करने के लिए हमें जो उपाय मिला है, वह है धारणीय विकास की अवधारणा। ये समस्याएँ इतनी बड़ी हैं कि अगर समय रहते हम धारणीय विकास की अवधारणा का क्रियान्वयन नहीं किये जो ये समस्याएँ एक न एक दिन पूरे मानव सभ्यता के साथ–साथ पूरी पृथ्वी के विनाश करने की क्षमता रखती है। इसलिए यहाँ यह परम आवश्यक हो जाता है कि अगर हमें अपना भविष्य सुरक्षित रखना है तो धारणीय विकास की अवधारणा का क्रियान्वयन अति शीघ्र करना ही करना होगा, क्योंकि इसका कोई और विकल्प नहीं है। धारणीय विकास हमारे भविष्य को सुरक्षित रखने का एक और एक मात्र विकल्प है। यह हमारे वर्तमान और भविष्य साथ ही साथ हमारी पृथ्वी जिसे हम माँ का दर्जा देते हैं, के लिए हमारे द्वारा दिया गया सबसे बहुमूल्य उपहार होगा।

तरीके– यहाँ निम्नलिखित तरीकों का वर्णन किया गया है, जिसको अगर अमल में लाया जाए तो हम धारणीय विकास की अवधारणा को प्रतिपादित कर सकते हैं और अपने आने वाले पीढ़ियों के लिए भी विकास के अवसर प्रदान करते हुए वर्तमान को भी विकास के पथ पर ले जा सकते हैं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 10, October 2024

1. प्रकृति ने हमें दो प्रकार के संसाधनों की व्यवस्था की है– एक जो सीमित हैं, दूसरा जो असीमित है। आज मानव समाज अपना पूरा ध्यान प्रकृति द्वारा दिये गये सीमित संसाधनों पर लगाए हुए हैं, क्योंकि यह उसे आसानी से मिल जाता है। धारणीय विकास की अवधारणा के स्वरूप हमें अपनी इस मनोदशा को बदलना होगा और सीमित संसाधनों के जगह पर हमें प्रकृति द्वारा प्रदान किये गए असीमित संसाधनों पर फोकस करना होगा।

   हमें ऊर्जा के पारम्परिक स्रोतों के स्थान पर गैर पारम्परिक स्रोतों के विकास पर ध्यान देना होगा। जैसे– गोबर गैस, सी0एन0जी0, एस0पी0जी0, वायु शक्ति, सौर ऊर्जा, लघु जलीय प्लान्ट इत्यादि।

   पूरा मानव समाज अपने भोजन के लिए पृथ्वी पर ही निर्भर है। आधुनिक समय में हम जिस प्रकार की खेती कर रहे हैं, उसी का परिणाम कहीं न कहीं मृदा प्रदूषण का कारण बन रहा है। हमें अपने कृषि के तरीके को भी बदलना होगा। हम धारणीय विकास की अवधारणा को प्राप्त करने के लिए जैविक खेती, जैविक कम्पोस्ट खाद, जैविक कीट नियंत्रण इत्यादि को अपना सकते हैं।

   यह पूर्णतया सत्य है कि प्रकृति ने हमें अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का एक खजाना प्रदान किया हुआ है। प्रदत्त प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग कैसे करना है यह हम पर निर्भर करता है। प्राकृतिक संसाधन भी दो प्रकार के हैं। एक वह जो सीमित मात्रा में है और दूसरे वह संसाधन जो असीमित हैं, अर्थात् वह समय के साथ बनते रहते हैं। हम अगर धारणीय विकास को प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उन प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करना होगा, जो असीमित मात्रा में है, जो कि आज वर्तमान में हमें मिल रहे हैं और आने वाले पीढ़ियों को भी प्राप्त होंगे। जो साधन सीमित मात्रा में हैं, हमें उनका प्रयोग भी सीमित करना होगा, ताकि हम उनको बचा सकें। अपने आने वाले पीढ़ियों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए और सही मायने में यही धारणीय विकास होगा।

2. यह पूर्णतया सत्य है कि आज का समय प्रौद्योगिकीय, तकनीकी का युग है। आज जो तकनीकी में जितना आगे हैं, उसको उतना ही विकसित माना जाता है, लेकिन यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि क्या हम आधुनिक तकनीक प्राप्त करने की अंधी दौड़ में ऐसी तकनीकी तो नहीं प्राप्त कर लेते हैं, जो हमारे प्राकृतिक संसाधनों के विनाश का भी कारण बनती हैं। अगर हमें धारणीय विकास की अवधारणा को प्रज्वलित करना है तो उन्हीं तकनीक पर ही विचार करना चाहिए, जो हमारे प्राकृतिक संसाधनों से मित्रवत हो अर्थात् उनको हानि न पहुँचाए, जिससे यह प्राकृतिक संसाधन नष्ट न हों और हम अपने आने वाली पीढ़ियां को भी दे सकें।

3. आज को भी देश विकास के लिए तमान परियोजनाओं का निर्माण करता है। इन परियोजनाओं का निर्माण आवश्यक भी है, जिससे हम अपनी वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा कर सकें, लेकिन क्या हम अपनी सभी परियोजनाओं का इस प्रकार मूल्यांकन करते हैं कि इसका प्रभाव आने वाले पीढ़ियों, प्राकृतिक संसाधनों पर क्या पड़ेगा। अर्थात् हमें कोई भी परियोजना बनानी है तो उसका व्यापक मूल्यांकन करना चाहिए कि उसका प्रभाव हमारे प्रकृति पर प्रतिकूल तो नहीं होगा। हमें केवल उन परियोजनाओं का ही क्रियान्वयन करना चाहिए, जो इस शर्त पर विकास प्रदान करे कि वह प्रकृति द्वारा प्राप्त संसाधनों का नुकसान नहीं करेंगे। परियोजनाओं का मूल्यांकन तीन E अर्थात

Environmental Protection, Ecological balance, Economic Efficiency के आधार पर किया जाना चाहिए।

4. वर्तमान में धारणीय विकास परम आवश्यक बन गया है। विश्व की सभी अर्थव्यवस्थाओं अर्थात् देशों को यह चाहिए कि धारणीय विकास से सम्बन्धित जितने भी नियम अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर या राष्ट्रीय स्तर पर बनाये गये हैं, उनका सही पालन करें। अपने विकास रूपी यात्रा में इस बात पर विशेष ध्यान दें कि यह विकास कहीं ऐसा तो नहीं है जो हमारे प्राकृति संसाधनों पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है और अगर डालता है तो उसको तत्काल समाप्त करने का प्रयास करें। विश्व के सभी देशों द्वारा पर्यावरण से सम्बन्धित अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा प्रतिपादित विभिन्न संधियों व प्रोटोकाल को पूर्ण मान्यता दी जाय और उनका पूर्णतः अनुपालन किया जाय।

5. वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बड़े स्तर पर उत्पादन करने की आवश्यकता है। अगर हम धारणीय विकास को बनाना चाहते हैं तो हमें अपने उत्पादन का विकेन्द्रीकरण करना होगा। विकेन्द्रीकरण का परिणाम यह होगा कि हम प्रकृति द्वारा प्राप्त संसाधनों का उपयोग न्यासंगत कर पायेंगे, जिससे हम आने वाली पीढ़ियों के लिए भी उन्हें बचा कर रख सकेंगे।

6. हमें अपनी उन तमाम गलत आवश्यकताओं की बलि देनी होगी, जिनको पूरा करने में हम अपने बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधनों का गलत उपयोग कर रहे हैं।

7. हमें प्रकृति द्वारा ऐसे बहुत सारे बहुमूल्य संसाधन प्राप्त हैं, जिनकी कोई सीमा नहीं है। वह समय के साथ बनते रहते हैं अर्थात् यह असीमित हैं। हमें अपने आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ऐसे ही संसाधनों पर ध्यान देने की आवश्यकता है जैसे– सौर ऊर्जा, वायु शक्ति, जल शक्ति, इत्यादि।

8. हमें अपने अन्दर और आने वाले पीढ़ियों के अन्दर इस प्रकार की नैतिकता का विकास करना होगा, जिससे हमें अपने छोटे–छोटे स्वार्थ को त्याग कर आने वाली पीढ़ियों के बारे में भी सोच सकें।

9. धारणीय विकास को तभी प्रतिपादित किया जा सकता है, जब विश्व के देश एक दूसरे की सहायता के लिए तत्पर हों। इस भावना का अनुपालन करके हम प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण भी कर सकते हैं तथा अपने वर्तमान की आवश्यकताओं को भी पूरा कर सकते हैं।

10. अगर धारणीय विकास को प्राप्त करना है तो हमें अपने भौतिकतावादी जीवन से आगे बढ़कर प्रकृतिवादी जीवन अपनाने की आवश्यकता है, जिससे कि हम अपने प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकें।

उद्देश्य– धारणीय विकास या सतत् विकास का मुख उद्देश्य है कि मानव समाज में इस धारणा का विकास करना कि मानव प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करने से पहले इस बात पर विचार करें कि क्या इन साधनों का उपयोग करना मेरे लिए आवश्यक है या हम उनका उपयोग किये बिना भी अपना जीवन जी सकते हैं। क्योंकि अगर हम इन संसाधनों का उपयोग नहीं करते हैं तो हम इन संसाधनों को अपने आने वाली पीढ़ियों के लिए बचा कर रख सकते हैं। धारणीय विकास की अवधारणा के द्वारा हम प्रकृति द्वारा प्रदत्त संसाधनों का न्याय संगत उपयोग कर सकते हैं। धारणीय विकास के द्वारा पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं उचित प्रबन्धन किया जा सकता है, जिससे कि धारणीय विकास की जो अवधारण है,

उसका क्रियान्वयन कर सकते हैं। हम अपने विकास को सतत बना सकें, इसको प्राप्त कर सकते हैं। यह सत्य है कि आवश्यकताओं की कोई सीमा नहीं होती, लेकिन अगर हमें धारणीय विकास की अवधारणा का पूर्ण रूप से क्रियान्वयन करना है तो हमें अपनी आवश्यकताओं की सीमा बनानी होगी। हमें केवल उन्हीं आवश्यकताओं को पूरा करना होगा, जो हमारे लिए वास्तव में आवश्यक हो। विकास की अन्धी दौड़ में प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग हमें उन आवश्यकताओं के लिए करना होगा, जो हमारे लिए आवश्यक है। इस प्रकार हम अपने धारणीय विकास की अवधारणा को प्राप्त कर सकते हैं। अपने आने वाली पीढ़ी का भविष्य भी सुरक्षित कर सकते हैं। यह हमारा नैतिक कर्तव्य भी है, क्योंकि प्रकृति द्वारा मिले हुए पूरे संसाधन हमारे लिए नहीं है।

निष्कर्ष– उपर्युक्त विवरण से यह बात तो सौ प्रतिशत स्पष्ट हो जाती है कि अगर हम अभी भी केवल विकास की दौड़ में दौड़ेंगे तो हम अपने आने वाली पीढ़ियों के लिए कुछ नहीं छोड़ेंगे, क्योंकि लालच का कोई अन्त नहीं होता है। इसलिए यह आवश्यक है कि हमें विकास तो करना है, लेकिन केवल विकास नहीं, वह होगा धारणीय विकास या सतत् विकास। जिस विकास की कोई सीमा न हो जो निन्तर हो और तब जाकर हम अपने प्राकृतिक संसाधनों के साथ न्याय कर पायेंगे, साथ ही साथ अपने आने वाली पीढ़ियों के साथ भी न्याय कर पायेंगे।

अगर धारणीय विकास प्राप्त करना है तो उसका एक और एक उपाय बस यही है– हमें अपने प्रकृति से प्यार करना सीखना पड़ेगा।

सन्दर्भ–

1. भारत की खोज, पं0 जवाहर लाल नेहरू।
2. हिन्दी स्वराज, महात्मा गांधी।
3. दैनिक जागरण, अमर उजाला में प्रकाशित लेख।
4. NCRT Books.
5. प्राकृतिक संसाधनों का सतत् विकास, डॉ0 सुनील कुमार, श्री हिमांशु ग्रोवर।
6. सतत् विकास के लिए संसाधनों का प्रबन्धन, सुषमा गोयल।
7. पारिस्थितिकी और सतत विकास, पी0एस0 रामकृष्णन्।
8. सत्य के साथ मेरे प्रयोग, महात्मा गांधी।